Chhatrapati Shahu Ji Maharaj University, Kanpur

**Answer Script Details**
**Barcode** 10240952

**Roll No.** 24040000008
**Total Mark** 51/75.00

**Exam** MASTER OF ARTS_ODD EXAM-DEC-24
**Subject** A020703T - KAVYA EWAM NATAK

**Question wise Mark Summary**

| Q.No | Mark | Q.No | Mark | Q.No | Mark | Q.No | Mark |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| 1A | 3/5 | 6B | NA/7 | | | | |
| 1B | 3/5 | 7 | NA/15 | | | | |
| 1C | 4/5 | 8 | NA/15 | | | | |
| 1D | 2/5 | 9 | 8/15 | | | | |
| 1E | 3/5 | | | | | | |
| 1F | 4/5 | | | | | | |
| 1G | 4/5 | | | | | | |
| 1H | 4/5 | | | | | | |
| 1I | 4/5 | | | | | | |
| 2A | NA/7 | | | | | | |
| 2B | NA/7 | | | | | | |
| 3A | NA/7 | | | | | | |
| 3B | NA/7 | | | | | | |
| 4A | NA/7 | | | | | | |
| 4B | NA/7 | | | | | | |
| 5 | 12/15 | | | | | | |
| 6A | NA/7 | | | | | | |

# Chhatrapati Shahu Ji Maharaj University
## Kanpur, Uttar Pradesh

**PART-I**

Date of Exam: 03-01-2025
Exam No.: 12
Paper Code: A020703T
Subject: काव्य एवं नाटक
Year/Sem: I st
Name of Candidate: SHANYA AGNIHOTRI
Roll No.: 24040000008

Signature of Candidate: Shanya Agnihotri
Signature of Invigilator: (signed)
COE Facsimile: (signed)

**PART-II**

MARKS OBTAINED

| Q. | 1 | 2 | 3 | 4 | 5 | 6 | 7 | 8 | 9 | 10 |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| (a) | | | | | | | | | | |
| (b) | | | | | | | | | | |
| (c) | | | | | | | | | | |
| (d) | | | | | | | | | | |
| (e) | | | | | | | | | | |
| (f) | | | | | | | | | | |
| (g) | | | | | | | | | | |
| (h) | | | | | | | | | | |
| (i) | | | | | | | | | | |
| (j) | | | | | | | | | | |
| Total | | | | | | | | | | |

Total Marks in Figures: Max. Marks:
Total Marks in Words:

Paper Code: A020703T

Signature of Evaluator

**PART-III**

Course: M.A
Session: 2024-25 Year/Semester: I st
Subject: काव्य एवं नाटक

Paper Code: A 0 2 0 7 0 3 T
Exam Date: 0 3 - 0 1 - 2 0 2 5
Name of Candidate: S H A N Y A A G N I H O T R I
Father's Name: O N K A R A G N I H O T R I

महाविद्यालय का कोड College Code: F B 0 1

परीक्षा केन्द्र का कोड Exam Centre Code: F B 0 1

परीक्षा का प्रकार Type of Exam: संस्थागत Regular (marked) / भूतपूर्व छात्र Ex. Student / व्यक्तिगत Private / बैक पेपर परीक्षा Back paper Exam

ANSWER BOOKLET NO.

10240952

Paper Code: A020703T

**PART-IV**

नामांकन संख्या Enrollment Number: C S J M A 2 1 0 0 1 4 4 4 8 2

परीक्षार्थी अनुक्रमांक संख्या Candidate's Roll Number: 2 4 0 4 0 0 0 0 0 0 8

पेपर कोड Paper Code: A 0 2 0 7 0 3 T

Signature of Candidate: Shanya Agnihotri

Signature of Invigilator: (signed)

C S Facsimile

COE Facsimile

नोट : 1. परीक्षार्थी को निर्देशित किया जाता है कि आवरण पत्र के पृष्ठ भाग पर अंकित सभी निर्देशों को सावधानी पूर्वक पढ़ें। 2. [illegible] 3. गोलों को काले या नीले बॉलपेन से भरा जायें।

## INSTRUCTIONS TO THE CANDIDATE FOR FILLING PART-I

1. Read the instructions carefully given on the answer script and admit card.
2. Write Date of Exam, Shift, Paper Code & Name of Subject Correctly.
3. Write Name & Roll No. Correctly.
4. Write Semester & Branch Correctly.

## INSTRUCTIONS TO THE CANDIDATE FOR FILLING PART-III

1. Use blue or black ball point pen for writing alphabets & numerals in ☐ Boxes.
2. Carefully study the example before you start marking.
3. As shown in the example below blacken the circles completely.

4. Make no Stray marks on this sheet.
5. **DO NOT WRITE OR MARK ON THE BAR CODE.**

## IN ORDER TO AVOID UFM (UNFAIR MEANS) :

1. The Roll No. and Answer Book no. found elsewhere or any other symbol found in the answer book will be treated as unfair means.
2. Any tempering of Bar Code and Booklet no shall be treated as Unfair Means.
3. Do Not bring the materials like slip of paper/mobile/digital diaries/ study material/ revision notes in examination hall. Possession of the mobiles/ digital diaries/ electronic watch and any other electronic gadget except memory less scientific calculator shall be considered as UFM case.
4. Do not keep or paste currency note in answer script it shall be consider as UFM.

## अनुचित साधन से बचने हेतु:

1. उत्तर पुस्तिका के निर्देशित स्थान को छोड़कर अनुक्रमांक एवं उत्तरपुस्तिका का क्रमांक कही और न लिखे तथा कोई भी चिन्ह न बनाये क्योंकि यह अनुचित साधन प्रयोग की परिधि में आता है।
2. उत्तर पुस्तिका के बारकोड अथवा उत्तर पुस्तिका संख्या पर छेड़ करने पर अनुचित साधन प्रयोग माना जायेगा।
3. परीक्षा कक्ष में निम्न वस्तुएं साथ न लाये, जैसे लिखे हुए कागज के टुकड़े, मोबाईल, डिजिटल डायरी, कोपी, पुस्तक यह सभी वस्तुए जो अनुचित साधन के अन्तर्गत आती है। केवल संबंधित प्रश्नपत्र में ही मेमोरी लैस साइटफिक कैलकुलेटर ले जाने की अनुमन्यता होगी।
4. उत्तर पुस्तिकाओं में रूपये न रखें न ही उत्तर पुस्तिका में चिपकायें। ऐसा करना अनुचित साधन प्रयोग की परिधि में आता है।

## परीक्षार्थी के लिए निर्देश

1. प्रवेश पत्र एवं उत्तर पुस्तिका पर दिये गये निर्देशों को ध्यान से पढ़ें।
2. कवर पृष्ठ के दूसरी तरफ कुछ न लिखें।
3. उत्तर पुस्तिका के पृष्ठों पर दोनों तरफ लिखें।
4. प्रश्न पत्र पर अपने अनुक्रमांक के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
5. प्रश्न पत्र कोड एवं प्रश्न पत्र कोड सावधानी पूर्वक लिखें।
6. अपनी स्थिति स्पष्ट लिखें।
7. उत्तर पुस्तिका के पृष्ठों की संख्या देखें। अगर उत्तर पुस्तिका में पृष्ठ (1–24) से कम है या फटे हुए है, तो परीक्षा शुरू होने के पूर्व दूसरी उत्तर पुस्तिका ले लें।
8. प्रश्नपत्र को देख, यदि प्रश्नपत्र के विषय कोड, विषय का नाम तथा प्रश्न में कोई त्रुटि है तो उसके परीक्षा शुरू होने के 30 मिनट के अन्दर कक्ष निरीक्षक को तत्काल सूचित करें, उसके बाद विश्वविद्यालय द्वारा कोई कार्यवाही नहीं की जायेगी।
9. प्रश्नों के उत्तर लिखने के लिये पैंसिल का प्रयोग न करें।
10. B कोपी या अतिरिक्त ग्राफ नहीं दिया जायेगा।

## INSTRUCTIONS TO THE CANDIDATE

1. Read the instructions carefully given on the Question Paper, Admit Card & Answer Script.
2. Do not write anything on back side of the cover page.
3. Write on both sides of pages of answer book.
4. Do not write anything on question paper except Roll Number.
5. Write Paper Code & Question Paper Id carefully.
6. CHECK the number of pages (1-32) or any other kind of damage in your answer script, if found than change the answer script immediately before the commencement of examination.
7. CHECK the Question Paper for any kind of discrepancy e.g. Subject Code, Subject Name and Question of the Question Paper during first THIRTY MINUTES of the commencement of the exam, so that it can be corrected in TIME. After that no. corrections shall be entertained by the university.
8. Do not use pencil for answering the question.
9. Write status correctly e.g. those appearing in carry over papers should fill in status as Carry Over. Those appearing as Ex-Students should fill in status as ex.
10. No supplementary answer book & graph paper will be provided.

## INSTRUCTIONS TO THE CANDIDATE FOR FILLING PART-IV

1. Use blue or black ball point pen for writing alphabets & numberals in ☐ Boxes.
2. Use blue or black ball point pen for filling the circles.

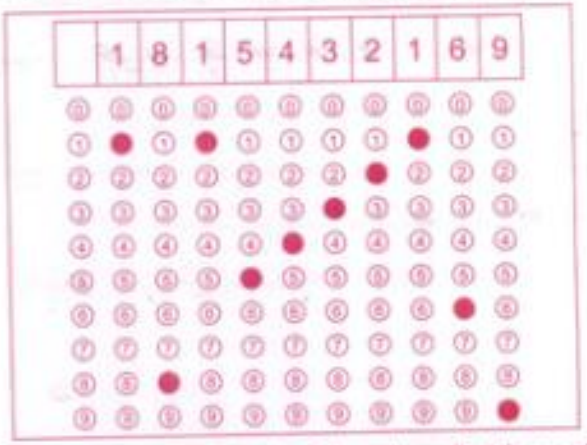


**Note - If your Roll No. is of 10 digits. Please leave first three columns.**

Paper Code

01

## खण्ड - अ

उत्तर 1(A) **महाकवि भवभूति का परिचय :-**

महाकवि भवभूति संस्कृत साहित्यकारो में मूर्धन्य हैं। इन्होंने अपनी रचनाओं के आदि और अन्त में अपने विषय में संक्षेप में बताया है।

महाकवि भवभूति का जन्म पद्मपुर नामक ग्राम में हुआ था। इनके पितामह का नाम भट्ट गोपाल था। इनकी माता का नाम जातुकर्णी था। भवभूति कश्यप गोत्र के थे। इन्हें कन्नौज के राजा यशोवर्मा का आश्रय प्राप्त था। इनके पञ्चम पीढ़ी के पूर्वज का नाम महाकवि था।

महाकवि भवभूति के विषय में प्रसिद्ध है -
"कवय: कालिदासाद्य: भवभूतिर्महाकवि: ।"

**कृतित्व :-**

महाकवि भवभूति की तीन रचनाएँ प्रसिद्ध हैं -

- मालती माधव
- महावीर चरितम्
- उत्तरराम चरितम्

- **मालती माधव :-** यह दस अंकों का प्रकरण है। यह श्रृंगार रस प्रधान है। इसमें मालती - माधव की प्रणय कथा का वर्णन है।

- **महावीर चरितम् :-** यह सात अंक का वीर रस प्रधान नाटक है। इसमें सीता विवाह से राम राज्याभिषेक की कथा वर्णित है।

Paper Code



Do Not Write anything in this Portion

• उत्तररामचरितम् !- यह भवभूति का उत्कृष्ट एवं करुण रस प्रधान सात अंक का नाटक है। इसमें सीता-परित्याग, शम्बूक वध, लव-कुश जन्म अश्वमेध यज्ञ तथा सीता पुनर्मिलन की कथा वर्णित है।

"उत्तरामचरिते भवभूतिर्विशिष्यते।"

उत्तर - 1(B) त्रिविक्रम भट्ट ने 'नल-चम्पू', जिसे चम्पूकाव्य का आदि ग्रन्थ माना जाता है, कि रचना की। इनका जन्म हैदराबाद में दसवीं शताब्दी में हुआ था। इनके पिता का नाम नरादित्य था। नल चम्पू को 'दमयन्ती कथा' तथा 'हरिचरण सरोजांक' भी कहा जाता है। त्रिविक्रमभट्ट की अन्य कृतियाँ मदालसाचम्पू, इन्द्राभिषेक हैं।

उत्तर - 1 (C) 'याच्ञा मोघा वरमधिगुणे नाधमे लब्धकामा'।

सन्दर्भ !- प्रस्तुत सूक्ति कविकुलगुरु कालिदास की कृति 'मेघदूतम्' के पूर्वमेघ से उद्धृत है। यह एक खण्डकाव्य / गीतिकाव्य है।

प्रसंग !- अपने स्वामी के शाप से अभिशप्त यक्ष अपनी प्रिया के पास मेघ के द्वारा सन्देश भेजता है। वह मेघ से कहता है :-

व्याख्या !- गुणी या श्रेष्ठ मनुष्य से कार्य कहने पर कार्य के निष्फल होने पर सन्देह नहीं है वरन् मूर्ख से कार्य कहने पर उसके सफल होने पर भी सन्देह है।

Paper Code

03

उत्तर - 10) कालिदास का व्यक्तित्व :-

कालिदास संस्कृत के सुप्रसिद्ध कवि हैं। वे सिर्फ भारत के ही नहीं, वरन् विश्व साहित्य के शिरोमणि हैं। उनके विषय में प्रसिद्ध है -

"पुरा कवीनां गणनाप्रसङ्गे कालिदासोऽधिष्ठितकनिष्ठः।
तत्तुल्यकवेरभावादनाम् सार्थवतीवभूव अनामिका ॥"

कवि शिरोमणि कालिदास ने अपनी रचनाओं में अपने विषय में नहीं कहा है, तथापि विद्वानों ने उनके विषय में जानने का प्रयास किया है। विद्वान उनके जन्मस्थान, स्थितिकाल आदि को लेकर एक मत नहीं हैं। कुछ महाकवि का जन्मस्थान बंगाल को, कुछ काश्मीर को तो कुछ उज्जैन को बताते हैं। परन्तु इतना स्पष्ट है कि उज्जैन इनकी क्रीडास्थली है।

कालिदास को प्रथम शताब्दी ई.पू. का माना जाता है। इनके विषय में अनेक किंवदन्तियाँ प्रचलित हैं। एक जनश्रुति के अनुसार कालिदास बज्रमूर्ख थे। अपनी पत्नी तथा महान विदुषी विद्योत्तमा से तिरस्कृत हो कालिदेवी की उपासना से ये महान विद्वान बने।

कृतित्व :- कविकुलगुरु कालिदास की सात रचनाएँ प्रामाणिक मानी जाती हैं -

महाकाव्य :- 1- रघुवंशम् 2- कुमारसम्भवम्

खण्डकाव्य / गीतिकाव्य :- 1- मेघदूतम् 2- ऋतुसंहार

नाटक :- 1- मालविकाग्निमित्रम् 2- विक्रमोर्वशीयम्
3- अभिज्ञानशाकुन्तलम्।

Do not write anything in this portion

Do Not Write anything in this Portion

Paper Code



उत्तर-1(E) त्रिविक्रमभट्ट कृत 'नलचम्पु' का नायक निषध नरेश नल है। आर्यावर्त देश में निषध नामक का एक श्रेष्ठ जनपद है तथा उसमें उत्तम पुरुषों के निवास करने योग्य एक नगरी है जिसका नाम है- निषधा। राजा नल वही का राजा है। वह अत्यन्त बलशाली, पराक्रमी, कर्तव्यपरायण, प्रजानुरञ्जक दयालु, वीर, युद्ध में शत्रुओं का संहारक तथा राजा वीरसेन का पुत्र है।

उत्तर-1(F) त्रिविक्रमभट्ट ने 'नलचम्पु' की रचना की। यह चम्पूकाव्य में आदि ग्रन्थ है। गद्य तथा पद्य की मिश्रित रचना को चम्पू कहा जाता है।

त्रिविक्रमभट्ट की भाषा प्राञ्जल, संस्कृतनिष्ठ है। उन्होंने अपनी कृति में श्लेषों का प्रयोग अधिक किया है। श्लेषों के द्वारा उन्होंने अपनी रचना में चमत्कार उत्पन्न किया है।

उत्तर-1(G) 'उत्तररामचरितम्' महाकवि भवभूति की अमर कृति है। इसका मूल आधार वाल्मीकि कृत 'रामायण' है तथा इस पर 'पद्मपुराण' का भी प्रभाव दिखाई पड़ता है। कवि ने इसमें यत्र-तत्र कुछ परिवर्तन भी किए हैं। 'उत्तररामचरितम्' सात अंकों का एक नाटक है। इसका वध्य द्वितीय अंक के अन्तर्गत वर्णित है। सीता परित्याग के 12 वर्ष पश्चात् राम के राज्य में एक ब्राह्मण पुत्र की अकाल मृत्यु हो जाती है जिससे यह ज्ञात होता है कि एक शूद्र तपस्या कर रहा है। उसने कलियुग का पदार्पण करने के लिए राम शम्बूक नामक शूद्र तापस का वध करते हैं।

उत्तर-1(H) उपमा कालिदासस्य :- कविकुलगुरु कालिदास भारत के ही नहीं अपितु विश्व के कवियों में शिरोमणि हैं। कवि शिरोमणि कालिदास ने अपनी कृतियों में उपमा, रूपक, उत्प्रेक्षा और अर्थान्तर-न्यास अलंकारों का प्रयोग किया है। लेकिन कवि को उपमा अलंकार अत्यधिक प्रिय है। महाकवि ने अपनी रचनाओं में कई अनुपम उपमाएँ दी हैं।

1- स्मृतिरेव गच्छति ।
2- श्रुतिरेव ~~गच्छति~~ अनुगच्छति ।। → रघुवंशम्

'मेघदूतम्' में भी कवि ने एक अचेतन मेघ को एक दूत के रूप में चित्रित किया। अपनी सर्वोत्कृष्ट कृति 'अभिज्ञानशाकुन्तलम्' में उन्होंने शकुन्तला के शरीर की कई अनोखी उपमाएँ दी हैं।

उत्तर-1(D) 'उत्तररामचरितम्' महाकवि भवभूति की एक अमरकृति है। यह करुण रस प्रधान सात अंक का नाटक है।

उत्तररामचरितम् के प्रथम अंक का कथानक इस प्रकार है —

मञ्च पर सूत्रधार द्वारा सूचित कर दिया जाता है कि राम का राज्याभिषेक हो गया तथा सभी अतिथियों को भी विदा कर दिया गया है। राम की माताएँ, ऋषि वशिष्ठ, अरुन्धती आदि ऋष्यशृंग के द्वादशवर्षीय यज्ञ में गए हैं।

राम का रंगमहल में प्रवेश होता है। तथा वे सीता को चित्रवीथि के चित्र दिखाते हैं। इसमें सीता-विवाह से लेकर अग्निशुद्धि तक के चित्र हैं। सीता गंगा में स्नान करने की इच्छा जाहिर करती है। सीता गर्भवती हैं। तभी राम को पता चलता है कि जनता में सीता को लेकर लोकापवाद फैला हुआ है।

Do Not Write anything in this Portion

कि वे रावण के घर रहकर आयी है अत: अपवित्र है। राम सीता को गंगा-स्नान के बहाने प्रजानुरञ्जन के लिए परित्याग कर देते है। राम स्वयं इस परित्याग से दुःखी हैं क्योंकि वे जानते हैं कि सीता पवित्र है। उधर सीता गर्भ की पीड़ा तथा एकाकी होने के कारण गंगा में अपनी जान देना चाहती हैं। पृथ्वी तथा गंगा उनकी रक्षा करती हैं। बालक लव-कुश का जन्म होता है तथा दूध छुड़ाने के बाद लव-कुश का लालन-पालन वाल्मीकि के आश्रम मे होता है तथा सीता पाताल मे रहती हैं। यही प्रथम अंक समाप्त हो जाता है।

## :- खण्ड - ब :-

उत्तर - 5 महाकवि भवभूति संस्कृत साहित्य के कवियों मे अग्रणि हैं। महाकवि भवभूति की एक नाटककार के रूप में विशेष कीर्ति प्राप्त है -

"कवयः कालिदासाद्याः महाकविर्भवभूतिः ।"

महाकवि भवभूति को 'उत्तररामचरितम्' के द्वारा विशेष प्रसिद्धि मिलि है। यह उनकी अमर कृति है।

"उत्तररामचरिते भवभूतिर्विशिष्यते ।"

महाकवि की तीन रचनाएँ हैं- मालती माधव, महावीर चरित, उत्तररामचरित। तीनों ही रचनाएँ अलग-अलग रस से सम्बन्धित होने से उनका कथानक भी पृथक्-पृथक् है।

Do Not Write anything in this Portion



मालती माधव (प्रकरण) — श्रृंगार रस प्रधान
महावीर चरितम् (नाटक) — वीर रस प्रधान
उत्तरराम चरितम् (नाटक) — करुण रस प्रधान

उस समय नाटकों की रचना या तो श्रृंगार प्रधान होती थी या वीर रस प्रधान। किन्तु महाकवि ने करुण रस प्रधान नाटक की रचना कर एक क्रान्तिकारी कदम उठाया तथा वे इसमें सफल भी हुए।
"अपि ग्रावा रोदित्यपि दलित वज्रस्य हृदयम्।"

उपर्युक्त पुक्ति भवभूति के लिए प्रसिद्ध है। महाकवि करुण रस के निष्पादन में इतने सिद्धहस्त हैं कि वे पत्थर तक को रुला दे।
महाकवि भवभूति की रचना 'उत्तररामचरितम्' में सर्वत्र करुण रस की धारा प्रवाहित है। अन्य रस भी मात्र करुण के निमित्त मात्र हैं।
"एको रसः करुण एव निमित्तभेदात् ।"

नाटक के प्रथम अंक में राम-सीता अपने प्राचीन दिनों का स्मरण कर चित्रवीथी के चित्रों को देखकर अत्यन्त व्याकुल हो जाते हैं। सीता के परित्याग में वे कारुण्य से भरकर स्वयं आत्मोत्सर्ग तक को उद्धृत हो जाती हैं।
द्वितीय अंक में पञ्चवटी में राम सीता के साथ विहार दिनों को यादकर व्याकुल होते हैं, रोते हैं, सीते-सीते चिल्लाते हैं।
तृतीय अंक में मानो सर्वत्र करुण की ही धारा प्रवाहित हो रही है। राम का बारम्बार मूर्छित हो जाना अदृश्या सीता का उन्हें चेतना प्रदान करना अत्यन्त ही कारुण्य से पूर्ण है।
चतुर्थ अंक में माताएँ, जनक, वशिष्ठ आदि सीता

के परित्याग का समाचार सुनकर अयोध्या में प्रवेश नहीं करते बल्कि वाल्मीकि आश्रम में जाते हैं।

पञ्चम और षष्ठ अंक में लव का लक्ष्मण पुत्र चन्द्रकेतु के साथ युद्ध किसी कारुणता से कम नहीं है।

सप्तम अंक में राम लव-कुश को देखकर सीता का स्मरण व निर्वासन याद करते हैं। और मूर्छित हो जाते हैं।

अन्ततः कवि ने नाटक को सुखान्त बनाया राम-सीता का पुनर्मिलन हुआ। परन्तु नाटक में सर्वत्र करुण रस की धारा बह रही है।

अतः

"एको रसः करुण एव निमित्तभेदात्।"

महाकवि करुण रस के निष्पादन में श्रेष्ठ है—

"कारुण्यं भवभूतिरेव तनुते।"

## खण्ड-स

उत्तर-9 'मेघदूतम्' महाकवि कालिदास का खण्ड काव्य है। इसमें 2 खण्ड हैं - 1-पूर्व मेघ 2-उत्तर मेघ तथा 121 पद हैं।

मेघदूतम् में कवि ने, अपने स्वामी के शाप से अभिशप्त यक्ष, मेघ द्वारा अपनी प्रिया के पास सन्देश प्रेषण वर्णित किया है।

'मेघदूतम्' के आधार पर कालिदास की काव्य-कला की विशेषताएँ इस प्रकार हैं—

Do Not Write anything in this Portion

Do Not Write anything in this Portion



1- भाषा - शैली :- महाकवि कालिदास की भाषा शैली शुद्ध परिष्कृत है। उन्होंने संस्कृतनिष्ठ शब्दों का चयन किया परन्तु उनकी कृति में सामान्य जनमानस ने अपनी लोक प्रचलित भाषा में ही वार्ता की है जोकि स्वाभाविक है। उनकी भाषा सरल - प्रवाहमय है। वे भावों के अनुरूप शब्दों का चयन करते हैं।
कवि शिरोमणि कालिदास की रीति वैदर्भी रीति है।

2- प्रकृति - चित्रण :-
महाकवि ने प्रकृति का बहुत ही सूक्ष्म चित्रण किया है। 'मेघदूतम्' में कवि ने मेघ द्वारा सन्देश भिजवाने के माध्यम से रत्नागिरि से अलकापुरी तक का आकाश मार्ग बताया है।
महाकवि ने प्रकृति का मनोरम एवं सूक्ष्म चित्रण के माध्यम से प्रकृति का मानवीकरण कर दिया है।
नदियाँ वायु के प्रवाह द्वारा इठलाती हुयी प्रतीत होती हैं तथा तरंग के प्रवाह पर वे अपनी भौंहें तान लेती हैं।
अनेक दृश्यों को भी चित्रित किया जा सकता है - राजहंसों द्वारा कमलनाल को चोंच से दबाए हुए मेघ के साथ उड़ना।

महाकवि ने प्रकृति का चित्रण इतना प्रभावशाली किया है कि वे हमारे चक्षु पटलों के समक्ष प्रत्यक्षरूप से उपस्थित हो।

इस प्रकार महाकवि कालिदास ने सरल - प्रवाहमय भाषा, वैदर्भी रीति, मन्दाक्रान्ता छन्द, प्रकृति चित्रण आदि के माध्यम से अपनी कृति को अमर ~~किया~~ बनाया है।

Paper Code



Do Not Write anything in this Portion

Paper Code



Do Not Write anything in this Portion

Do Not Write anything in this Portion

Do Not Write anything in this Portion

Do Not Write anything in this Portion

Do not write anything in this Portion

Paper Code



Do Not Write anything in this Portion

Do not write anything in this Portion

Do Not Write anything in this Portion

Paper Code

19

DO NOT WRITE ANYTHING IN THIS PORTION

Paper Code



Do Not Write anything in this Portion

Paper Code



Do Not Write anything in this Portion

Do Not Write anything in this Portion

Paper Code

22

X

Paper Code

Do Not Write anything in this Portion

Paper Code

24

X